अध्यात्म-दर्शन

[आनन्दघन चौबीसी पर पद्मप्रभाष्य]

स्तुतिकार
योगीश्वर सत श्री आनन्दघनजी

भाष्य-निर्देशक
श्रमणसघीय महामहिम राष्ट्रसत आचार्यप्रवर
श्रीआनन्दऋषिजी महाराज

भाष्यकार
विद्वद्रत्न पं० मुनिश्री नेमिचन्द्रजी म०

भाष्यप्रेरक
तपस्वीरत्न श्री मगनमुनिजी म०

सयोजक
प्रवचनप्रभाकर श्रीसुमेरमुनिजी म०, एवं सेवानिष्ठ श्रीविनोदमुनिजी

प्रकाशक
विश्ववात्सल्य प्रकाशन समिति
लोहामण्डी, आगरा – २ (उ० प्र०)

★ ग्रन्थराज :
अध्यात्मदर्शन

★ विषय .
चौवीस सीर्थङ्करो की स्तुति के
माध्यम मे अध्यात्म-ज्ञान

★ स्तुतिकार ·
योगीश्वर सत श्रीआनन्दघनजी

★ भाष्यकार :
पं० मुनिश्री नेमिचन्द्रजी

★ भाष्य-निर्देशक :
श्रमणसंघीय आचार्यप्रवर
श्री आनन्दऋषिजी महाराज

★ भाष्यप्रेरक :
तपस्वीरत्न श्रीमगनमुनिजी म०

★ भाष्य-उपप्रेरक :
सेवानिष्ठ श्रीकुन्दनऋषिजी म०

★ संयोजक
प्रवचन-प्रभाकर प० सुमेर-
मुनिजी म०, कर्मठ सेवानिष्ठ
श्रीविनोदमुनिजी

★ प्रस्तावना-लेखक
विद्वद्वर्य श्री चन्दनमुनिजी म०

★ आशीर्वचन :
राष्ट्रसत उपाध्याय कविरत्न
श्री अमरमुनिजी म०

★ सस्करण :
प्रथम, सितम्बर १९७६

★ प्रकाशक :
विश्ववात्सल्य प्रकाशन समिति
लोहामडी, आगरा-२ (उ०प्र०)

★ मुद्रक :
कल्याण प्रिंटिंग प्रेस
राजामण्डी, आगरा-२

★ मूल्य :
तेरह रुपये

प्राप्ति-स्थान

१. विश्ववात्सल्य प्रकाशन समिति
लोहामंडी, आगरा-२ (उ०प्र०)
२ मगल किरण स्टोर्स
गुजरगल्ली,अ नगर (महाराष्ट्र)

तपस्वी श्रीमगनलालजी : एक परिचय

—मुनि हस्तीमल, मेवाडी

तपस्वीरत्न मुनि श्रीमगनलालजी महाराज का वीरभूमि राजस्थान के निम्बाहेडा के निकट 'राणीखेडा' गाँव मे वि० स० १९६३ फाल्गुन कृष्णा २ गुरुवार को जन्म हुआ। आप ओसवालकुल के अन्तर्गत चौपडागोत्रीय श्रीनथमलजी एव मातुश्री हगामबाई के आत्मज हैं। आपके ज्येष्ठ भ्राता का

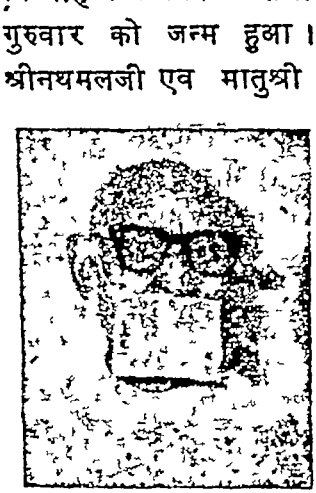

नाम श्रीरतनलालजी चौपडा है। पिता का लाडला एव माता की आँखो का तारा, जन-मन का दुलारा बालक 'मगन' माता की ममतालु गोद मे खेलता-कूदता बढता रहा। दो वर्ष की उम्र मे ही आपके पिताश्री का स्वर्ग-वास हो गया। दोनो भाईयो के जीवनविकास का पूरा दायित्व माता पर आ गया। माँ ने साहस के साथ अपने दायित्व को निभाया। दोनो पुत्रो को पढा-लिखा कर योग्य बना दिया और बड होने पर दोनो को व्यवसाय मे लगा दिया। समय पर अपने ज्येष्ठ पुत्र रतनलाल की योग्य कन्या के साथ शादी कर दी। आपको भी विवाह के बन्धन मे आवद्ध करने का प्रयत्न किया, परन्तु आपने विवाह करने से ही स्पष्ट इन्कार कर दिया।

माता-पिता के धार्मिक सस्कारो से आपका जीवन सस्कारित था। बचपन से ही आप मे अद्भुत साहस, निर्भयता, सेवा, कष्टसहिष्णुता और साधु-साध्वियो के प्रति श्रद्धा-भक्ति थी। साधु-साध्वियों की सेवा मे रहने के कारण आपको शास्त्र-श्रवण, धर्म के स्वरूप तथा जीवन के स्वरूप को समझने का सहज ही अवसर मिल जाता था। आप सन्तो के मुख से वीतरागवाणी मात्र सुन कर

ही नही रह गए, उसे जीवन मे उतारने का भी प्रयत्न करने रहे। इसी का परिणाम है, कि आपको सासारिक भोगो एव भोगजन्य साधनो से विरक्ति हो गई। आपने अपनी भावना को अपनी ममतालु मां एव ज्येष्ठ भाई तथा परिजनो के सामने रखी। माता एव बडे भाई ने आपको विभिन्न प्रकार से समझाया, पत्नियो ने भी आपको गृहस्थजीवन मे रोक रखने के लिए सब तरह से प्रयत्न किए। परन्तु वे सफल नही हो सके। जिसके जीवन में सच्चा वैराग्य उद्‌बुद्ध हो जाता है, आत्मा मे त्याग की ज्योति प्रज्वलित हो उठती है, उसे कोई भी शक्ति ससार मे रोक कर नहीं रख सकती।

सौभाग्य से आपको योग्यतम गुरु मिल गए। स्थानकवासी समाज मे आचार्यप्रवर श्रीहुकमीचन्दजी महाराज के पष्ठम पट्टधर युग-पुरुष, युग-द्रष्टा, क्रान्तिकारी विचारक, ज्योतिर्धर आचार्य श्रीजवाहरलालजी महाराज के सुयोग्य उत्तराधिकारी सरलस्वभावी, पण्डितप्रवर तत्कालीन युवाचार्य गणेशीलालजी महाराज के सान्निध्य मे वि० स० १९९६ माघ शुक्ला एकादशी के दिन जावद शहर मे दोराजी की बगीची मे आपने भागवती जैनदीक्षा स्वीकार की। दीक्षा के १५ दिन पहले अजमेरनिवासी एक ज्योतिषी ने इस दिन दीक्षा का विघ्नकारक बताया था, परन्तु दीक्षार्थी मगनलालजी ने इसकी परवाह न करके उसी दिन दीक्षा ग्रहण की। चबूतरे के कठड़े पर लगी शिलाएँ टूट कर गिर पडी, किन्तु शासनदेव की कृपा से किसी के जरा भी चोट न आई। यह अद्‌भुत चमत्कार था। आपने पूज्य गुरुदेव की सेवा मे में रह कर आगमो का अध्ययन किया; और अहर्निश सन्तो की सेवा-शुश्रूषा मे सलग्न रहे। अस्वस्थ साधु की परिचर्या करने का आपको अच्छा अनुभव है। आपको नाडी का ज्ञान बहुत अच्छा है। इसलिए रोगो का निदान करने और उसके अनुरूप आयुर्वेदिक औषध बताने मे आप बहुत निपुण हैं। भीनासर (बीकानेर) मे जब ज्योतिर्धर आचार्यप्रवर श्रीजवाहरलालजी महाराज अस्वस्थ थे, तब आपने अस्वस्थ-अवस्था से ले कर अन्तिम सास तक बडी लगन, श्रद्धा एव भक्ति से सेवा की। उनके अन्तिम समय से कुछ घटे पहले उनकी वाणी बद हो गई थी, तब आप उन्हे दवा दे कर होश मे लाए। उन्होंने आपके द्वारा प्रेरणा करने पर सथारा ग्रहण किया, जो ५ घटे तक का आया। रुग्ण, ग्लान, वृद्ध एवं बाल साधुओ की सेवा-वैयावृत्य करने मे आप सिद्धहस्त हैं और सेवा के

कार्य मे आपको आनन्द भी आता है। वर्तमान आचार्यप्रवर श्रीआनन्दऋषिजी महाराज की सेवा का भी आपको लाभ मिला है।

आप दीर्घ-तपस्वी भी हैं। आपने अब तक ५१ और ४१ दिन के उपवास किए हैं। ३३ और ३१ दिन की तपः-साधना दो बार की है, १५, ११, ९, १०, ९ एक-एक बार और अट्ठाई, सात, छह, पाँच, तैले एव बेले तो अनेक बार किए हैं। आप तप-साधना मे केवल गर्मी पानी लेते हैं। तप और त्याग से तपा हुआ आपका सयम-निष्ठ जीवन प्रत्येक साधु के लिए प्रेरणा-दायक है।

आपका विहार (पैदल भ्रमण) क्षेत्र मेवाड, मारवाड, बीकानेर, मालवा गुजरात, महाराष्ट्र, बम्बई एव आन्ध्र-प्रदेश रहा है। कई वर्षों से आप आचार्य सम्राट् श्रीआनन्दऋषिजी महाराज की सेवा मे हैं और आचार्यश्री आपकी सेवा से सन्तुष्ट हैं। मैंने यह अनुभव किया है, कि आप सन्तो की धायमाता के समान हैं।

आध्यात्मिक साहित्य के प्रति आपको विशेष अभिरुचि है। आपके हृदय मे आनन्दघन चौबीसी पर राष्ट्रभाषा हिन्दी मे विस्तृत एव सुन्दर भाष्य लिखा कर समाज मे आध्यात्मिक विचारो का प्रचार करने की भावना जागृत हुई। आपने अपने गुरुभ्राता सिद्धहस्तलेखक पण्डितप्रवर मुनि श्रीनेमिचन्द्रजी महाराज को इस ग्रन्थ पर भाष्य लिखने का अनुरोध किया, जिसका फल पाठको के समक्ष है। तपस्वीरत्नश्री के ही प्रबल पुरुषार्थ की देन है, कि 'अध्यात्म-दर्शन' के रूप मे यह 'पदमग्न-भाष्य' उपलब्ध हो सका है।

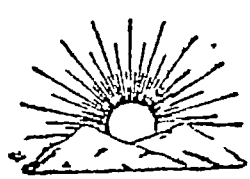

प्रकाशकीय

अध्यात्म योगी सन्त आनन्दघनजी द्वारा रचित चौबीसी (चतुर्विंशति-स्तुति) आध्यात्मिक जगत् में अत्यन्त प्रसिद्ध है। इसमें दर्शन, धर्म, पूजा, भक्ति, धर्म-क्रिया, आत्मा के सर्वोच्च गुणों की आराधना, आत्मिक वीरता, परमात्म-पद का दर्शन, मन आदि की साधना इत्यादि आध्यात्मिक विषयों पर चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति के माध्यम से सरस, सरल, भक्तिरस-प्रधान गेय पदों की रचना है। इस पर अनेक विचारकों एवं साधकों ने अर्थ, भावार्थ, विवेचन आदि प्रस्तुत किये हैं, किन्तु विस्तृत ढंग से पदों में निहित तात्पर्यों को विविध पहलुओं से खोल सके, ऐसी व्याख्या से परिपूर्ण भाष्य हिन्दी भाषा में अब तक प्रकाशित नहीं हुआ था। हमें प्रसन्नता है कि हमारी प्रकाशन समिति से हिन्दी भाषा में अध्यात्मदर्शन के नाम से पदमग्न-भाष्य प्रकाशित हुआ है। इसके भाष्यकार हैं—प्रबुद्धविचारक विद्वद्वर्य प० मुनि श्रीनेमिचन्द्रजी महाराज। इसके मार्गनिर्देशक तो राष्ट्रसंत आचार्यश्रीआनन्दऋषिजी म० रहे, किन्तु सर्वाधिक सम्प्रेरक रहे हैं—तपस्वीरत्न श्रीमगनमुनिजी महाराज, जिनकी सतत प्रेरणा व श्रीकुन्दनऋषिजी म० की सहप्रेरणा और सर्वाधिक सहयोग से यह विशालकाय ग्रन्थराज प्रकाशित हो सका है। इसी प्रकार हम राष्ट्रसंत उपाध्याय श्रीअमरमुनिजी म के प्रति अत्यन्त कृतज्ञ हैं, जिन्होंने अपना आशीर्वचन लिख कर हमें उपकृत किया है, साथ ही विद्वद्वर्य श्रीचन्दनमुनिजी म (साहित्यनिकाय) के भी हम अत्यन्त आभारी हैं कि उन्होंने इस ग्रन्थराज पर अत्यन्त भाववाही सुन्दर प्रस्तावना लिख कर इसका समुचित मूल्यांकन किया है। प श्रीसुमेरमुनिजी एवं विनोदमुनिजी ने इस भाष्य को आद्योपान्त अनेक बार पढ़ा, और इसमें उचित सुझाव, संशोधन एवं परिवर्द्धन सूचित करने की महती कृपा की है। पण्डितरत्न विजयमुनिजी शास्त्री एवं कलम-कलाधर मुनि समदर्शीजी का भी इसमें अपूर्व सहयोग मिला है, एतदर्थ हम इनके प्रति भी कृतज्ञ हैं।

अन्त में, जिन-जिन महानुभावों का प्रत्यक्ष या परोक्षरूप से इस ग्रन्थराज में सहयोग मिला है, तथा जिन-जिन महानुभावों ने उदारतापूर्वक इस ग्रन्थराज के प्रकाशन में अर्थसहयोग दिया है, उन सबके प्रति हम हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। मुज्ञ सुधीजन इसे पढ़ कर आध्यात्मिक लाभ उठाएँगे तो हम अपना प्रयास सार्थक समझेंगे। —मन्त्री, विश्ववात्सल्य प्रकाशन समिति, आगरा।

आशीर्वचन

भारत की सन्त-परम्परा मे समग्र भारत के प्रत्येक प्रान्त मे अध्यात्मवादी, भक्तिवादी, तथा तत्त्ववादी सन्त हुए हैं। उत्तरप्रदेश की सन्तपरम्परा मे सूरदास तथा तुलसीदास का नाम अत्यन्त प्रसिद्ध है। ये दोनो सन्त वैष्णव-सम्प्रदाय के थे। परन्तु सन्त कवीर किसी भी सम्प्रदाय मे आवद्ध न हो कर उन्मुक्त विचारक कहे जा सकते हैं, महाराष्ट्र मे सन्त रामदास, सन्त तुकाराम तथा एकनाथ आदि जनप्रिय तथा लोक-प्रसिद्ध सन्त हो चुके हैं। राजस्थान मे मीरा, रैदास और दादू राजस्थानी जनता के मन के कण-कण मे रम चुके हैं। मीरा जैसा पद-माधुर्य तथा भावगाम्भीर्य अन्यत्र मिलना बडा ही दुर्लभ है। यही कारण है, कि मीरा के सगीतमय पद काश्मीर से ले कर कन्याकुमारी तक आबाल-गोपाल प्रसिद्ध हैं। अत. मीरा का जीवन तथा उसके भाव-प्रवण पद भारतीय जन-जीवन की सार्वजनिक सम्पत्ति माने जाते हैं।

वीर-प्रसूता राजस्थानभूमि में एक अन्य अध्यात्मवादी सन्त हुआ था, जिसका नाम आनन्दघन था। सन्त आनन्दघन का जन्म जैनपरम्परा के शालीन परिवार मे हुआ था। उसके मज्जागत सस्कार भी जैन-सस्कृति के ही रहे। परन्तु सन्त आनन्दघन के पदो को तथा अध्यात्म-प्रधान स्तुतियो को पढ कर यह निर्णय नही किया जा सकता, कि वह जैन-परम्परा मे आवद्ध था। सन्त आनन्दघन ने अपने पदो मे अन्धपरम्परा, रूढि और जडता का खुल कर विरोध किया है। परम्पराप्रेमियो ने उसे परम्परा के जाल मे जकडने का एकाधिक बार प्रयास किया था, पर स्वतन्त्रविचारक तथा युगस्पर्शी चिन्तन के धनी सुधारवादी सन्त आनन्दघन ने परम्पराप्रेमियो की किसी भी शर्त को मानने से स्पष्ट इन्कार कर दिया था। इसी कारण परम्परा-वादियो द्वारा उन्हे कई बार तिरस्कृत भी होना पडा, पर उस मस्त योगी को आदर-निरादर की कोई परवाह नही थी। धर्मध्वजी जडवादी लोगो से जीवनभर वे सघर्ष करते रहे, उनके साथ समझौते के समस्त प्रयास असफल रहे। सन्त आनन्दघन जैनपरम्परा के थे, इसमे जरा भी सन्देह नही है। परन्तु उनके

अध्यात्मिक काव्य मे सूर जैसा गाम्भीर्य, तुलसी जैसी व्यापकता, कबीर जैसी स्पष्टता एव प्रखरता तथा मीरा जैसा माधुर्य और तुकाराम जैसी मृदुता सर्वत्र छलकती दृष्टिगोचर होती है। यद्यपि उनके विहारक्षेत्र मुख्यतया राजस्थान और गुजरात रहे, तथापि उनकी कीर्ति और प्रसिद्धि भारत के प्रान्त-प्रान्त मे परिव्याप्त हो चुकी थी।

सन्त आनन्दघन ने जैन-परम्परा-प्रसिद्ध समस्त तीर्थंकरो की अध्यात्म-प्रधान स्तुति-सरचना की है। एक-एक तीर्थंकर की एक-एक स्तुति मे गायक और श्रोता आत्म-विभोर हो उठते हैं। सन्त आनन्दघन कल्पनाप्रधान नही, अपितु सहज भाव प्रधान कवि था। उसकी स्तुति और पदो मे सर्वत्र शान्तरस छलकता रहता है। उनके पदो का स्थायीभाव निर्वेद है। काव्य की कसौटी पर कस कर देखा जाए तो माधुर्य तथा प्रसाद गुण प्रतिपद मे प्रतिबिम्बित दिखाई देते हैं। अलकार-योजना भी यत्र-तत्र उपलब्ध होती है, परन्तु यह गौण है, मुखर नही हो पाई। कवि का उधर ध्यान ही नही था, उसका मुख्य लक्ष्य था—एक-मात्र शान्त-रस के परिपाक की ओर। शान्तरस के परिपाक मे तथा उसकी अभिव्यक्ति में आनन्दघन को पूर्णत सफलता मिली है। शान्त-रस के विभाव, अनुभाव, स्थायीभाव तथा संचारी-भाव बडी खूबी के साथ रस की अभिव्यक्ति कर देते हैं। शान्त-रस वाच्य नही रहा, वह सर्वत्र अभिव्यञ्जित हुआ है। यही कारण है, कि आनन्दघन के अध्यात्मप्रधान काव्य मे सर्वत्र भावो की मधुरिमा, शैली की प्राजलता तथा भाषा की गरिमा अपनी अभिव्यक्ति पाती रही।

मेरे प्रेमी सर्वोदयविचारक मुनि श्रीनेमिचन्द्रजी ने सन्त आनन्दघन की चतुर्विशति-स्तुतियो पर 'अध्यात्म-दर्शन' नाम से एक भाष्य लिखा है, जिसमे एक-एक स्तुति को स्पष्ट करने का सफल प्रयास किया है। अभी तक आनन्दघन पर इतना विशद, इतना स्पष्ट तथा इतना मर्मस्पर्शी भाष्य किसी भी लेखक ने प्रस्तुत नहीं किया है। इसका समग्र श्रेय प्रबुद्ध विचारक गाधीवाद के व्याख्याता, अध्यात्मयोगी मुनिवर नेमिचन्द्रजी को है, जिन्होने अथक परिश्रम करके अध्यात्मप्रेमी जनता के कर-कमलो मे एक अध्यात्मकमल समर्पित कर दिया है। जिसे पा कर प्रत्येक पाठक तथा श्रोता को अमित आनन्द की भावानुभूति तथा रसानुभूति होगी।

—उपाध्याय अमरमुनि

वीरायतन, राजगृह (नालंदा)